

काव्यशास्त्र के विविध नाम

Ms. Rekha Kumari
Assistant Professor
Dept. of Sanskrit
Shivaji College, DU.

क्रियाकल्प

- संस्कृत साहित्य में काव्यशास्त्र के लिये विविध अभिधानों का उल्लेख मिलता है ।
- संस्कृत काव्यशास्त्र का एक नाम 'क्रियाकल्प' भी है । सर्वप्रथम रामायण में काव्यशास्त्र के लिये 'क्रियाकल्प' पद का प्रयोग करते हुए कहा गया है- "क्रियाकल्पविदश्चैव तथा काव्यविदोजनान्" ।
- यहाँ प्रयुक्त 'क्रियाकल्पविद्' और 'काव्यविद्' पदों का संबंध काव्यशास्त्र से है ।

- 'क्रियाकल्प'- काव्य सौन्दर्य की परीक्षा करने में सक्षम ।
- 'काव्यविद्'- काव्य को जानने वाले अर्थात् काव्य रस का आनन्द उठाने वाले , सहृदय ।
- क्रियाकल्प में प्रयुक्त 'क्रिया' का अर्थ है- काव्यग्रन्थ ।
- कल्प का अर्थ है- विधान ।
- अतः काव्यग्रन्थों का विधान करने वाले शास्त्र क्रियाकल्प कहलाया ।

काव्यशास्त्र

- काव्यशास्त्र से तात्पर्य है काव्य का शास्त्र- “काव्यस्य शास्त्रं काव्यशास्त्रम्” ।
- काव्य से तात्पर्य है- “कवेः कर्म” । अर्थात् कवि का कर्म काव्य है। यहाँ कवि की प्रधानता है। इस प्रकार कवि के कर्म से सम्बन्धित शास्त्र काव्यशास्त्र कहलाता है।
- शास्त्र से तात्पर्य है- “शासनात् शास्त्रम्, शिष्यतेऽनेन इति शास्त्रम्” ।
- अर्थात् विधि-निषेध का प्रतिपादन करने वाला शास्त्र । जो विधि और निषेध में ज्ञान का कारण होता है, उसको जानना चाहिए, उसका अध्ययन करना चाहिये क्योंकि उसी से लोकव्यवहार का प्रवर्तन होता है ।
- यहाँ शास्त्र को ही विधि-निषेध का प्रवर्तक कहा गया है ।

- इस प्रकार काव्यशास्त्र का तात्पर्य है- काव्य के सम्बन्ध में विधि और निषेध का नियमन करने वाला ।
- संस्कृत साहित्य में 'काव्यशास्त्र' पद का सर्वप्रथम प्रयोग भोजराज ने किया है-
“काव्यं शास्त्रेतिहासौ च काव्यशास्त्रं तथैव च ।”
- यहाँ 'काव्यशास्त्र' पद का स्पष्ट प्रयोग है ।
- कुछ विद्वानों के अनुसार 'शास्त्र' का अर्थ रहस्य प्रतिपादन है । अर्थात् काव्यशास्त्र में काव्य-रहस्यों का प्रतिपादन किया जाता है ।
- काव्य का रहस्य 'रस' है अतः समस्त काव्यों का प्रयोजन रस-निष्पत्ति ही है ।
- साहित्यशास्त्र के लिये प्रयुक्त होने वाले नामों में यह नाम सर्वाधिक प्रसिद्ध है ।